बिहारी के दोहों की व्याख्या

दोहा संख्या :- 73, 88, 94

दोहा संख्या :- 73 पत्रा ही तिथि पाइयै वा घर कैं चहुँ पास ।
नितप्रति पून्यौई रहै आनन - ओप - उजास ।।

व्याख्या :- इस दोहे में बिहारी ने नायिका के मुख-सौन्दर्य के अतियुक्तिपूर्ण वर्णन के लिए लोकजीवन से प्रतीकों को उठाया है। लोक में तिथि के जानने के लिए दो साधन हुआ करता है- एक कैलेंडर या तिथिपत्र और दूसरा चन्द्रमा के उदित होने का समय और उसका प्रकाश। लेकिन, नायिका के घर के आस पास चन्द्रमा के उजास के जरिए तिथि का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है क्योंकि उस सुन्दरी का मुख पूर्णिमा की चन्द्रमा की भाँति सतत् प्रकाशमान रहता है और उसकी मुख की दीप्ति के कारण ही हर रात पूर्णिमा की रात समझी जाती है।

मतलब पूर्णिमा की रात वाला प्रकाश वहाँ सतत् विद्यमान रहता है। इसी कारण नायिका के घर के आसपास चन्द्रमा के जरिए तिथि का अनुमान नहीं लगाया जा सकता जिसके के कारण तिथि के अनुमान लगाने का एक मात्र साधन शेष रह जाता है पत्रा।

यहाँ पर कालालिंग की योजना के जरिए नायिका के मुख - सौन्दर्य की व्यंजना की गई है, लेकिन अतियुक्ति के दबाव के कारण कालालिंग का सौन्दर्य पृष्ठभूमि में चला जाता है। बिहारी के इस दोहे को देखकर हमें सहज ही आचार्य शुक्ल के उस कथन की याद आती है जिसमें उन्होंने बिहारी के सौन्दर्य-चित्रण को उनके पक्ष में बतलाया है जो हाथी-दाँत के महीन बेल-बूटे को देखकर घंटों वाह-वाह किया करते हैं, न कि उनके पक्ष में जो

हृदय की आंतरिकता की चाह रखते हैं। यह दोहा चमत्कार-प्रेमी दरबारियों की रुचि के अनुकूल होने के कारण अत्यंत मूल्यवान है, जबकि संवेदना के धरातल पर सौन्दर्य के सहज और स्वाभाविक प्रभाव को उत्पन्न करने में असमर्थ।

दोहा संख्या :- 88

त्रिबली, नाभि दिखाइ, कर सिर ढकि, सकुचि, समाहि।
गली, अली की ओट कै, चली भली बिधि चाहि॥

व्याख्या :- बिहारी ने इस दोहे में रसिक नायक उस नायिका के प्रति क्रियाजन्य सौन्दर्य का वर्णन करता है, और इसके प्रति अपना अनुराग प्रदर्शित करता है जिससे अभी-अभी उसकी मुलाकात नाटकीय तरीके से हुई है। रास्ते से गुजर रही नायिका की नजर जैसे ही नायक पर पड़ती है, वह लजाने का नाटक करती है। प्रदर्शित संकोच के बहाने वह अपने दुपट्टे या आँचल को सिर पर रखने के लिए हाथ उठाती है और इस क्रम में अपनी त्रिबली और नाभि नायक को दिखा जाती है और फिर सखी की आँखों से बचकर भली-भाँति नायक को देखती हुई गली में मुड़ जाती है।

यहाँ पर चंचल नायिका का नायक पर नजर पड़ते ही सकुचाना। सात्विक अनुभाव का उदाहरण है, लेकिन जैसे ही नायिका सिर ढकने के बहाने अपने त्रिबली और नाभि दिखाती है और उसके द्वारा मुड़कर नायक पर दृष्टिपात किए जाने से इस प्रदर्शन की पुष्टि होती है, यह कायिक अनुभाव का उदाहरण बनता है। यहाँ पर जानबूझकर नायक को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश है।

दोहा संख्या- 94 तंत्री-नाद, कवित-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग॥

व्याख्या :- इस दोहे में कवि यहाँ पर अपने अनुभवों को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि तंत्रीनाद अर्थात् वीणा के स्वर, काव्य के

आस्वादन से प्राप्त होने वाला रस, मधुर एवं सरस गान और स्त्री के सानिध्य के आनंद की प्राप्ति के लिए उसमें सर्वांग डुबकी लगाना आवश्यक है। इसका वास्तविक आनंद उन्हें ही मिल पाता है जो इसमें सर्वांग डुबकी लगाते हैं। रीतिवादी मानसिकता के अनुरूप कवि की दृष्टि में उसी का जीवन सार्थक है जो आधे-अधूरे मन से इसमें प्रवेश करते हैं, वे इसके आनंद का आस्वादन नहीं कर पाते। उनका प्रयास बेकार हो जाता है निरर्थक हो जाता है। यहाँ पर आँजना के जरिए बिहारी यह संदेश देते हैं कि यदि इनका वास्तविक आनंद लेना चाहते हो, तो सर्वांग डुबकी लगाओ अन्यथा इनसे दूर ही रहो।

कहा जाता है कि यह दोहा स्वयं बिहारी की रचनाओं पर भी पूरी तरह से लागू होता है। जब इनमें से किसी के आनंद की प्राप्ति के लिए सर्वांग डुबकी लगाना आवश्यक है, तो बिहारी के दोहे में तो इनका सबका समर्थ समाहार है। मतलब यह कि बिहारी की रचना के गहराई में उतरे बिना उसका संपूर्णता में रसास्वादन संभव नहीं है।

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU. MUZAFFARPUR)
मो० नं० - 8292271041
ईमेल — benamkumar13@gmail.com

दिनांक
05/08/2020